गालो जनजाति की भाषा एवं लिपि व्यवस्था

मोर्जुम लोयी

अरुणाचल प्रदेश 83,743 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्रफल वाला एक खूबसूरत राज्य है। 'अरुणाचल' का अर्थ है 'उगते सूर्य का पर्वत'। यहां भारत में सबसे पहले सूर्योदय होता है। 20 फरवरी, 1987 में अरुणाचल प्रदेश को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। इसके पश्चिम में भूटान, उत्तर में चीन का तिब्बती क्षेत्र, दक्षिण-पूर्वी भाग में नागालैंड और म्याँमार और दक्षिण-पश्चिमी भाग में असम की सीमा पड़ती है। यहां मुख्यतः छब्बीस जनजातियाँ और सौ से भी अधिक उपजनजातियाँ निवास करती हैं – न्यीशी , तागिन, गालो, आदी, आपातानी मोनपा, शेरदुकपेन, ईदु मिशमी, दिगारु मिशमी, मिजु मिशमी, वांचो, नोक्ते, तांग्सा, खाम्ती, मेम्बा, खाम्बा, आका, मिजी आदि। सबकी अलग-अलग बोली, संस्कृति, परंपरा, खान-पान , वेश-भूषा, पर्व-त्योहार हैं। यहां मुख्य रूप से ज़िलों के नाम नदी या पर्वत के नाम पर रखे गए हैं- सियांग, कामेङ, लोहित, सुबनसिरि आदि और समुदाय के नाम से उनकी बोलियां, जैसे - न्यीशी की बोली न्यीशी, गालो के गालो, आपातानी के आपातानी, मोनपा के मोनपा। यहां ईसाई, हिंदु, दोञी-पोलो, बौद्ध आदि धर्मों का पालन किया जाता है।

अरुणाचल प्रदेश के लोग मुख्य रूप से कृषक हैं। यहां धान, मक्का, मड़वा, साग आदि अपने खेत में उगाते हैं, प्रत्येक घर में सब्जी के बाग होते हैं। यहाँ के लोग बहुत मेहनती होते हैं। यहां प्रमुख रूप से चावल, हरी सब्जी, मछली, मांस आदि खाया जाता है। चावल यहां का प्रमुख आहार है। यहां चावल की कई प्रजातियां पायी जाती हैं – जोहा, बोरा, मालभोग, चकोआ, काला चावल, रंजीत, आहु, लाल चावल, बोका, बाओ आदि। चावल से भात, चावल के आटे से कई प्रकार के व्यंजन, मदीरा आदि बनाया जाता है। इसके अलावा यहां उत्तर भारत, दक्षिण भारत के साथ कॉन्टिनेंटल व्यंजन भी बहुत लोकप्रिय है।

अरुणाचल प्रदेश अनेक जनजातियों का निवास स्थल है, इसलिए यहां विभिन्न बोलियां बोली जाती हैं। यहां अपनी स्थानीय बोलियों के अलावा हिंदी, अंग्रेजी, असमीया, नेपाली, बांग्ला आदि भाषाएं भी बोली जाती हैं। बाज़ारों, अस्पतालों एवं अन्य सार्वजनिक स्थलों में सभी भाषा-भाषी लोग हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं। हिंदी यहां की जनभाषा है। साक्षर-निरक्षर सभी हिंदी बोलते और समझते हैं। यहां कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी है। यहां की हिंदी को 'अरुणाचली हिंदी' या 'अरुण हिंदी' कहा जाता है। अरुणाचली हिंदी को हम निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं-

व्याकरणिक अशुद्धियाँ-

अरुणाचल प्रदेश में जनसाधराण द्वारा हिंदी सहज रूप से प्रयोग किया जा रहा है, किंतु इसमें कई प्रकार की व्याकरणिक अशुद्धियां पायी जाती हैं-

लिंग संबंधी त्रुटियाँ-

यहाँ की हिंदी में लिंग संबंधी दोष पाए जाते हैं। स्त्री, पुरुष आदि सभी मुख्य रूप से पुल्लिंग में बात करते हैं, यथा- खाना खाएगा, बाज़ार जाएगा, लड़की गाएगा आदि।

वचन संबंधी त्रुटियाँ:

अरुणाचल की बोलियों में वचन संबंधी नियम नहीं हैं। अपनी स्थानीय बोलियों में अगर एक वचन का बहुवचन का प्रयोग करना होता है तो अक्सर ये मुख्य शब्द के साथ बहुत सारे, अनेक, अधिक जैसे उपसर्ग जोड़ते हैं। उदाहरण देखिए – मुझे सोना है (हम सोएगा), तोगअ और तोरिक जंगल गए हैं (तोगअ और तोरिक जंगल गिया/ गया है)।

उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ-

हिंदी के शब्द व वर्ण से अपरिचित होने के कारण उच्चारण संबंधी त्रुटियाँ हो जाती हैं। निरक्षर लोगों की बात अलग है, यहाँ शिक्षित वर्ग में यह त्रुटियाँ आम हैं, उदाहरण देखिए- न्यीशी जनजातियों में 'ख' का उच्चारण 'ह' में किया जाता है। खाम्ती समाज में 'र' का उच्चारण 'ल' में किया जाता है। गालो समुदाय के लोग 'च','छ', 'स', 'श', 'ष' सभी वर्णो का उच्चारण 'स' में किया जाता है। फलस्वरूप खाना– हाना, खेत–हेत, टमाटर –तमातल, चप्पल-साप्पोल में उच्चरित किए जाते हैं। यहीं नहीं यहाँ हर्स्व-दीर्घ तथा समान ध्वनि वाले शब्दों में भी सही उच्चारण नहीं किया जाता , जैसे- कल-काल, सर-सार , हम-हाम , घर-गर , गाड़ी-गारी, भिंडी- बेन्दी, पंखा- पाङका आदि।

विरोधाभासी शब्द-प्रयोग-

अरुणाचली हिंदी में परस्पर विरोधी शब्दों को साथ रखकर सकारात्मक भावों की अभिव्यक्ति होती है, अक्सर इस तरह की हिंदी का प्रयोग अतिश्योक्ति एवं अपनी बातों पर ज़ोर देने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ –

वह लड़की भयानक सुंदर है

वह खतरनाक गाता है ।

बाज़ीगर में शाहरुख खान खराब एक्टिंग किया है दे ।

यही नहीं, किसी बात पर ज़ोर देने के लिए यहाँ शब्दों को खींचकर बोलते हैं, जैसे- 'वह स्थान यहाँ से काफी दूर है 'के स्थान पर 'वह जगह ब...हू...त...दूर है' या ' दू.....र ' कहेंगे।

लिपि-

अरुणाचल प्रदेश में खामती, मोनपा और गालो के अलावा अधिकांश जनजातियों की कोई लिपि नहीं हैं, इसलिए प्रमुखता से रोमन और देवनागरी लिपि का प्रयोग लेखन कार्य में हो रहे हैं। वांगचो जनजाति में डॉ. बानवांग लोसू द्वारा निर्मित लिपि वांचो लिपि में 44 अक्षर, 15 स्वर, 29 व्यंजन हैं। इन अक्षरों को मिलाकर 3000 शब्द बनाए जा सकते हैं। 2009 में इस लिपि के यूनिकोड एप्लिकेशन को मंजूरी मिल गई। खाम्ती जनजाति के लिपि को लिक-ताई कहा जाता है। ये म्याँमार की उत्तरी शान लिपि से मिलती-जुलती है, जो मोन-बर्मी लिपि का एक प्रकार है, जिसमें कुछ अक्षर अलग-अलग आकार लेते हैं। ये लिपि सैंकड़ों वर्ष पूर्व की 'लिक थो नमोक' लिपि से ली गई है। इसमें 17 व्यंजन. 14 स्वर सहित 35 अक्षर हैं। ये लिपि पारंपरिक रूप से मठों में पढ़ाई जाती है। बौद्ध धर्म ग्रंथ पालि भाषा में लिखा गया है। मोनपा समुदाय की लिपि भोटी है। किंतु आम जनता के लिए ये एक कठिन भाषा व लिपि है। वर्तमान में तृतीय भाषा के रूप में विद्यालयों में भोटी

पढ़ाया जा रहा है, ताकि यह आम जनता की भाषा व पहचान बन सके। यहीं नहीं राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक स्कूलों में प्रथम से आठवीं कक्षा तक अपनी मातृभाषा को तृतीय भाषा के रूप में अनिवार्यत: पढ़ाया जाने का आदेश जारी किया गया है।

अरुणाचल प्रदेश के तानी समुदाय के अंतर्गत पाँच जनजाति समुदाय आते हैं – गालो, न्यीशी, आदी, तागिन और आपातानी। आपातानी के अलावा अन्य चारो जन समुदाय की बोलियों में काफी साम्यता पायी जाती है। सभी बोलियों में विशेष प्रकार की ध्वनि उच्चारण का प्रयोग होता है, जिसकी पूर्ति रोमन लिपि से नहीं हो पाती। देवनागरी लिपि बहुत हद तक इसकी जरूरतों को पूरा करती है, किंतु तानी समुदाय की बोलियों में टोनल साउंड (ध्वनि) के आधार पर अर्थ परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण इस समुदाय के लोगों को अपनी स्वतंत्र लिपि की आवश्यकता महसूस हुई। तानी समुदाय और अन्य कई जनजातियों की बोलियों में अ, ञ, ङ आदि के अलावा कई ऐसी ध्वनियां भी है, जिसके लिए सही स्वर या व्यंजन की आवश्यकता महसूस होती रही हैं। इसी आवश्यकता को महसूस कर समय समय पर विद्वानों ने लिपि निर्माण का प्रयास किया है।

पादाम आकोर एन्नाम-

गालो समाज के इतिहास में जब से लिखने-पढ़ने की क्रिया आरंभ हुई , वे रोमन लिपि की मदद से अपनी स्थानीय बोली को लिपिबद्ध करते आए हैं, जिसे पादाम आकोर एन्नाम कहते हैं। सिर्फ गालो नहीं बल्कि पूरे आदी समुदाय के लोग इसी में लिखते आए हैं। 'पादाम' आदी समुदाय की एक उपजनजाति का नाम है, इसी नाम से लिपि का नाम पड़ा। 'आकोर' अर्थात अक्षर तथा 'एन्नाम' अर्थात लिखावट या लिखना। इसे लिखने का तरीका इस प्रकार है –

वर्ण	उच्चारण	शब्द
A	आ	Abir (आबिर)=बहन /समधन
E	ए	Ennam (एन्नाम)= लिखावट
NG	ङ	Ngok (ङोक) = मेरा
NY	ञ	Nyaru (ञारू) = कान

गालो एन्नाम (लिपि)-

वर्ष 2001 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक योजना के तहत नॉर्थ ईस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नॉलॉजी, नहारलगुन, अरुणाचल प्रदेश में जनजातीय भाषा एवं लिपि पर केंद्रित एक संगोष्ठी एवं कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यशाला के दौरान प्रो. तोमो रिबा, डॉ. तादो कार्लो और डॉ. हैरी लोयी द्वारा रोमन लिपि में गालो बोली के उच्चारण एवं आवश्यकता तथा लैपटॉप, कंप्यूटर आदि के कीबोर्ड में

उपलब्ध चिह्नों को ध्यान में रखकर एक संरचना तैयार की गई और हैरी लोई द्वारा उसे प्रस्तुत किया गया। वहीं डॉ. तोनी कोयू ने भी 'तानी लिपि' के नाम से एक लिपि तैयार की और उसे प्रस्तुत किया। ये लिपि लेटिन और बांग्ला लिपि से कुछ मिलती जुलती है। ये सिर्फ गालो ही नहीं बल्कि सभी समुदाय के ध्वनि व उच्चारण को ध्यान में रखकर बनाया गया। श्री जुमगअ लोलेन, तोमी अतअ आदि ने भी अपनी गालो लिपि प्रस्तुत की। तानी लिपि में टंकण और मुद्रण की कठिनाई और सीखने और समझने के लिए कुछ जटिलताएं थी, इसी प्रकार श्री जुमगअ लोलेन की गालो एन्नाम, तोमी अतअ की 'गालो स्क्रिप्ट इन देवनागरी' आदि में कुछ न कुछ कमियों के चलते प्रो. तोमो रिबा के टीम द्वारा प्रस्तुत लिपि पर और काम करने की संभावना को देखते हुए उसे स्वीकृति दी गई। एक लिपि का निर्माण कोई आसान काम नहीं होता और इस पहल और प्रयास के लिए सबका योगदान महत्त्वपूर्ण है। प्रो. रिबा की टीम ने लिपि की आवशयकता एवं उसके निर्माण को लेकर गालो कल्याण समाज के सामने अपना प्रस्ताव रखा। एक प्रगतिशील समाज का नेतृत्व करने वाले गालो कल्याण समाज ने इस पर विचार-विमर्श किया और इस पर और कार्य करने की सहमति जताई।

इसी दौरान रिचर्स सेंटर फॉर लिंगुइस्टिक टाइपोलॉजी, ला ट्रोब यूनिवर्सिटी से डॉ. मार्क फ्रोस्ट उनके संपर्क में आए, जो अपने अनुसंधान कार्य के लिए गालो गाँव में कुछ सालों से रह रहे थे। मार्क को जब गालो लिपि की आवश्यकता का पता चला तो उन्होंने अपना सहयोग देने की सहमति दी। उनके साथ डॉ. बोमचाक रिबा, इली रिबा, ईगो रिबा और गालो समुदाय के कई विद्वानों ने भी इस कार्य को अंजाम देने में पूरी लगन के साथ अपना सहयोग दिया। मार्क ने व्याकरण व फोनेटिक की मदद से इस लिपि को एक वैज्ञानिक संरचना व आकार दिया। मार्क शुद्ध और सही उच्चारण के साथ गालो बोली में बात करते थे। उनके इस वैज्ञानिक गालो लिपि को गालो समुदाय के लोगों ने न सिर्फ स्वीकार किया बल्कि इसे पूरे गालो समाज के लिए एक सशक्त और सर्वमान्य लिपि के रूप में पहचान दिलाने के लिए प्रयास करने लगे। उन्हें लगा कि वही शब्द और वर्ण का प्रयोग कर हम हस्र्व-दीर्घ स्वर वाले शब्दों को भी आसानी ने लिख-पढ़ सकते हैं, जिससे अर्थ ग्रहण में भी कोई कठिनाई होगी। डॉ. ताकोप जिरदो, अध्यक्ष, `गालो लैंग्वेज डेवलपमेंट कमिटी, गालो कल्याण समाज तथा श्री यादाम लोयी, प्रशासनिक अफसर टैक्स एंड एक्साइज़, अरुणाचल प्रदेश तथा गालो कल्याण समाज (गालो वेल्फेयर सोसायटी) के `गालो लैंग्वेज डेवलपमेंट कमिटी के मेंबर सेक्रेटरी के अनुसार गालो एन्नाम जिसे गालो स्क्रिप्ट (MRS) कहते हैं अर्थात मोडिफाईड रोमन स्क्रिप्ट को अरुणाचल स्टेट असेंबली द्वारा वर्ष 2008 को तृतीय भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसे नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के तहत मातृभाषा के रूप में स्वीकृति दी गई है। वर्ष 2009 में इसे इंटरनेशनल स्टैंडर्ड ऑर्गनाइजेशन द्वारा स्वीकृति मिली तथा 2016 से गालो क्षेत्र में इसे पाठ्यक्रम में भी शामिल किया जा रहा है। इस संदर्भ में प्रत्येक वर्ष SCERT (राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) के द्वारा सरकारी स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

गालो एन्नाम (GALO ENNAM) MRS- modified roman script

स्वर (Vowel) (उच्चारण के आधार पर) **:** 07 (सात)

गालो	A	I	U	E	O	V	W
पादाम	A	I	U	E	O	E	I
देवनागरी	आ	इ	उ	ए	ओ	अ	
फोनेटिक	**ɑ**	**I**	**U**	**E**	**O**	**ə**	**ɨ**

व्यंजन (Consonant) : 17 (सत्रह)

गालो	K	G	Q	C	J	X	T	D	N	P	B	M	Y	R	L	S	H
पादाम	K	G	NG	CH	J	NY	T	D	N	P	B	M	Y	R	L	S	H
देवनागरी	क	ग	ङ	च	ज	ञ	त	द	न	प	ब	म	य	र	ल	स	ह
फोनेटिक	k	g	ɴ	ʧ	ʤ	ɲ	t	d	n	p	b	m	j	r	l	ʃ	h

स्वर (हस्र्व-दीर्घ)

गालो	`
पादाम	–
देवनागरी	–
फोनेटिक	ː

उदाहरण :

१. A : Aki (उच्चारण- आकी) = पेट, Aum (उच्चारण- आउम)= तीन

२. I : Iki (उच्चारण- इकी) = कुत्ता, Iiku (उच्चारण- ईकू) = किण्वित कटा बांस

३. U : Uyo (उच्चारण- उयो) = भूत, Uun: (उच्चारण ऊन)

गालो के कुछ शब्द का उदाहरण देखिए -

- **आलो (ALO)** शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त होते हैं- हड्डी, नमक, दिन, उधर इत्यादि। शब्द के उच्चारण में लगने वाले समय के अनुरूप अर्थ परिवर्तन होता है। कभी-कभी वाक्य के अनुसार अर्थ परिवर्तन होता है। गालो एन्नाम (MRS) में 'ALO' नमक के लिए तथा 'ALOO' हड्डी के लिए प्रयुक्त किया जाता है। कुछ शब्दों का अर्थ वाक्य संरचना पर भी निर्भर होता है।
- **आयो (AYO)** शब्द भी रात, सास, मामी, जीभ, टेढ़ा आदि के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

विशेषताएं:

1. गालो एन्नाम रोमन लिपि तथा ध्वनि विज्ञान पर आधारित होने के कारण एक वैज्ञानिक लिपि है।
2. इसमें मूक अक्षर नहीं है, अर्थात ज़रूरी वर्णों का ही प्रयोग किया गया है, अनावश्यक वर्ण कही नहीं है, जैसे – अँग्रेजी में knife, knowledge, psychology आदि में अनावश्यक वर्ण होते हैं।
3. हस्र्व और दीर्घ स्वर की स्पष्टता है, जिससे उच्चारण में कोई समस्या उत्पन्न नहीं होती है। अँग्रेजी में 'इ, ई' दोनों ध्वनियों के लिए 'I, ee ' का प्रयोग किया जाता है।
4. यांत्रिक सुविधा भी इसकी एक विशेषता है। मुद्रण और टंकण की दृष्टि से ये सरल और सुविधाजनक है। ये आसानी से कंप्यूटर और मोबाइल फोन के की-पेड में उपलब्ध है।
5. एक ध्वनि= एक चिह्न नियम का पालन करते हुए पादाम 'NG' (ङ) के स्थान पर 'Q', 'NY' (ञ) के स्थान पर 'X', 'अ' के लिए 'V' आदि का प्रयोग किया गया है।

दोष :

कोई भी लिपि नितांत निर्दोष नहीं होती है। गालो लिपि (MRS) में भी कुछ कमियां हैं-

1. इस लिपि का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। ये रोमन लिपि पर आश्रित है।
2. गालो लोग अरुणाचल प्रदेश के सिर्फ पाँच ज़िलो में निवास करते हैं, अन्य बाईस जिले के लोगों को इसे लिखने, पढ़ने और समझने में कठिनाई होती हैं, बल्कि अभी तक गालो के कुछ वर्ग इस लिपि को नहीं समझ पाते हैं, इसके लिए उन्हें नए सिरे से इसका अध्ययन करना होगा।
3. इस लिपि में साहित्य रचना करने पर गैर गालो समाज के लोगों को समझ पाने में कठिनाई होती है, आदि।

इस तरह हम देख सकते हैं कि गालो एन्नाम गालो बोली के कई शब्दों का सही उच्चारण एवं सही अर्थ ग्रहण के लिए एक उपयुक्त लिपि है, इसका उदाहरण स्वयं मार्क पोस्ट है जो आस्ट्रेलिया के निवासी होते हुए भी गालो बोली को साफ और सही-सही उच्चारण के साथ बोल पाते हैं। श्रोता को सुनने और समझने में कठिनाई नहीं होती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि ये एक यूज़र फ्रेंडली लिपि है, आप अपने कंप्यूटर, मोबाइल आदि पर इसे आसानी से टाईप कर सकते हैं। वर्तमान में गालो कल्याण समाज इसके प्रयोग पर ज़ोर दे रहे हैं, किंतु कुछ वर्ग अभी भी ऐसे हैं, जिन्हें लगता है कि हम रोमन और देवनागरी के इस प्रकार आदी हो चुके हैं कि अब नवीन लिपि सीखने के लिए न तो वक्त है न इच्छा। इस वर्ग के लोग ऐसा मानते हैं कि पूरे अरुणाचल में छब्बीस प्रमुख जनजातियाँ और उनकी सौ से भी अधिक उप जनजातियाँ हैं, एक जनजाति के लिपि में लिखने पर वह उसी जनजाति के भीतर ही सीमित होकर रह जाएंगे। अन्य जनजाति के लोगों के लिए इसे सीखना और पढ़ना कठिन ही नहीं नामुमकिन भी है। वर्तमान में डॉ. ताकोप जिरदों, सर रोकोम बादो जैसे कई विद्वान गालो एन्नाम (MRS) में साहित्य रचना कर रहे हैं और साथ ही युवा पीढ़ी को इसके प्रयोग के लिए सहयोग व प्रोत्साहन दे रहे हैं। गालो बोली के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए डॉ. मार्क फ्रोस्ट की 'द फोनोलॉजी

एण्ड ग्रामर ऑफ गालो वर्ड्स " एक महत्त्वपूर्ण कृति है। वर्तमान में गालो एन्नाम (MRS) पर कई पाठ्य पुस्तक, राईम्स आदि की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके द्वारा गालो संस्कृति और परंपरा की रक्षा करने का प्रयास अभी भी जारी है।

संदर्भ सूची:

1. डॉ. दोगे डम्दिर, अरुण प्रभा, जनवरी-दिसंबर- 2018, पृ.122
2. वही, पृ.123
3. वही
4. लोयी, मोर्जुम, अरुणाचल प्रदेश के गालो समुदाय की लिपि व्यवस्था (आलेख), पृ.30-35 पूर्वोत्तर: भाषाएं एवं लिपियां, सं. रघुनाथ पाण्डेय, डॉ. दिलीप कुमार अवस्थी, निखिल पब्लिशर्स एंड डिस्टीब्यूटर्स, आगरा, 2023
5. वही

सहायक ग्रंथ :

1. त्रिपाठी, राम छबीला. *भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा*. इलाहाबाद: किताब महल. पृष्ठ 328
2. रिबा, इ., टी. रिबा, एम . न्योदू, एम.डब्ल्यू .पोस्ट, 'अ स्क्रिप्ट फॉर द गालो लैंगवेज़' 2007, अरुणाचल प्रदेश , गालो कल्याण समाज
3. 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण', केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार, नई दिल्ली
4. डॉ. लोयी, हैरी, असिस्टेंट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज, पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश से दिनांक 09/03/2023 में टेलीफोनिक साक्षात्कार
5. डॉ. लोलेन, जुमया, सह प्राध्यापक, दोञी-पोलो शासकीय महाविद्यालय, काम्की, अरुणाचल प्रदेश से दिनांक 07 मार्च, 2023 में टेलीफोनिक साक्षात्कार
6. डॉ. जिर्दो, ताकोप अध्यक्ष, `गालो लैंग्वेज ऑफ़ डेवलपमेंट कमिटी, गालो कल्याण समाज के 'टीचिंग ऑन गालो स्क्रिप्ट विषय पर यू ट्यूब वीडियो
7. श्री लोयी, यादाम प्रशासनिक अफ़सर टैक्स एंड एक्साइज़, अरुणाचल प्रदेश तथा गालो कल्याण समाज (गालो वेल्फेयर सोसायटी) के `गालो लैंग्वेज डेवलपमेंट कमिटी के मेंबर सेक्रेटरी से दिनांक 04/03/2023 में ईटानगर में साक्षात्कार।
8. श्री अतअ, दूदा, प्रिंसिपल आर्किटेक्ट, DE &Associates से दिनांक 08 मार्च 2023 में साक्षात्कार।

*(**लेखकीय परिचय:** अरुणाचल प्रदेश की सुपरिचित लेखिका मोर्जुम लोयी* बीनी याङा *शासकीय महिला महाविद्यालय, लेखी, नाहरलगुन, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं: 'मिनाम', 'ननम पोनू', 'काबू' इत्यादि। मोबा: 9366409976, ई-मेल : morjum2010@gmail.com)*